दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL5**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अनिल कुमार यादव

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं ✗

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 7/9/18, 5

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	9	7	6	4	6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

अच्छा

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ~~119~~ 120   टिप्पणी (Remarks):

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) यूनीकोड और हिन्दी

हिन्दी भाषा के तकनीकी विकास में यूनीकोड का आगमन युगान्तकारी घटना है। यूनीकोड के माध्यम से हिन्दी भाषा की समस्त ध्वनियों को चिन्हों में व्यक्त करना आसान हुआ।

यूनीकोड से पूर्व की व्यवस्था में एक बाइट में 8 बिट होते थे जबकि यूनीकोड में 16 बिट होते हैं। जिसमें 6 हजार से ऊपर संयोजन होते हैं। इससे न केवल हिन्दी बल्कि अन्य अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं के लिए भी की-बोर्ड की रचना व टाइपिंग आसान हो गयी है।

'यूनीकोड' का मानकीकरण अन्तर्राष्ट्रीय 'यूनीकोड कन्सोर्टियम' तय करता है। यह यूनीकोड के विकास को बढ़ाता है। अशोक चक्रधर ने 'यूनीकोड' को हिन्दी का "महामोद" कहा है।

यूनीकोड के कारण आज हिन्दी की टाइपिंग आसान हो गयी है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग की समस्या का लगभग अन्त हो गया है।

इसने हिन्दी को इन्टरनेट तथा वर्तमान सूचना व तकनीकी से जोड़ दिया तथा हिन्दी को सोशल ~~मीडिया~~ की भाषा बना दिया। इससे हिन्दी के प्रयोजन मूलकता में वृद्धि हुई।

प्रतिकोड, हिन्दी भाषा को आधुनिक सन्दर्भों से जोड़ कर इसे वर्तमान संचार-साधनों से युक्त कर इसके राजभाषा व सम्पर्क भाषा की प्रवृत्ति को आगे बढ़ाया है।

बहुत अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में जयन्त विष्णु नार्लीकर का योगदान

हिन्दी में वर्तमान में लगभग 4000 से ज्यादा विज्ञान पुस्तकों का लेखन हुआ है। लेकिन परिणाम की दृष्टि से पर्याप्त होते हुए भी गुणात्मक दृष्टि से कमजोर है। जयन्त विष्णु नार्लीकर ने हिन्दी में विज्ञान लेखन में परिणामात्मक व गुणात्मक योगदान दिया है।

नार्लीकर ने हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन में, लोक भाषा में, सरल शब्दों कठिन से कठीन विषयों को समझाया है।

कठिन

नार्लीकर ने कई पुस्तकों की रचना की है जैसे- 'परमाणु ऊर्जा का विकास', 'न्यूटन का सिद्धान्त' 'आकाशमण्डल के सवाल' इत्यादि।

नार्लीकर ने केवल पुस्तकों की रचना की बल्कि अनेक पत्र-पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में हिन्दी में लेख भी लिखा और लोगों को लोक भाषा में हिन्दी, गुणवत्तापरक सामग्री प्रदान की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इतना ही नहीं, नार्लीकर ने
अनेक अंग्रेजी पुस्तकों का हिन्दी
में अनुवाद भी किया इसमें
न्यूटन की 'प्रिंसिपिया' तथा
आइन्सटीन की 'सापेक्षता सिद्धान्त'
प्रमुख है।

इस प्रकार जयन्त विष्णु
नार्लीकर ने हिन्दी भाषा में
मौलिक व गुणवत्तापरक वैज्ञानिक
लेखन कर हिन्दी भाषी लोगों
में वैज्ञानिक रुचि पैदा की

अच्छा

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

देवनागरी लिपि के कम्प्यूटरीकरण को टाइपराइटर व टेलीप्रिन्टर के युग से निकलकर आधुनिक कम्प्यूटर की भाषा बनने की प्रक्रिया में समझा जा सकता है।

इसमें पहले टाइपिंग के लिए 'कोवान्ट' तथा 'कोर्तिन' फान्ट का प्रयोग किया जाता था। बाद में C-DAC पुणे तथा आइक्की ने देवनागरी के लिए अनेक विकसित फान्ट बनाये। इनमें कृतिदेव तथा मंगलम फान्ट का विशेष योगदान है।

आरम्भिक प्रयत्नों में IIT कानपुर तथा IIT मुम्बई का भी विशेष योगदान है। इन संस्थानों ने इसके लिए अपने-अपने स्तर से प्रयोग किये।

कम्प्यूटरीकरण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों के परिणाम स्वरूप यूनीकोड का आना हिन्दी भाषा व नागरी लिपि के विकास को अधिक प्रभावित किया। इसमें 16 बिट्स का प्रयोग किया तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

[0] और [1] के माध्यम से हिन्दी
की सभी ध्वनियों हेतु चिन्हों
का संयोजन तैयार किया गया।
'System' सिस्टम तथा अनुप्रयोग
सॉफ्टवेयर के आने नागरी लिपि
को आधुनिक बल मिला। माइक्रो
सॉफ्ट, याहू, BBC आदि ने भी
देवनागरी लिपि के कम्प्यूटरीकरण में
योगदान दिया।

अच्छा प्रयास

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विकारी और अविकारी पद

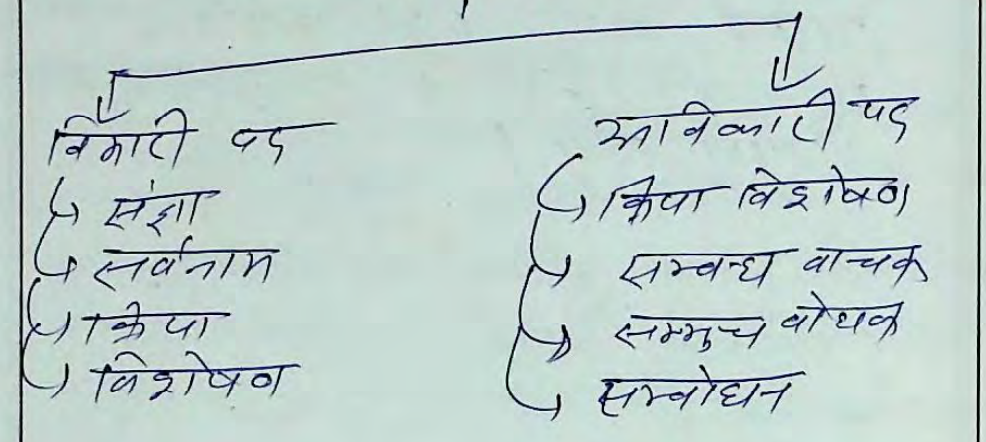

मानक हिन्दी की व्याकरणिक व्यवस्था के अन्तर्गत पद संरचना में विकारी तथा अविकारी पदों का अध्ययन किया जाता है।

पद संरचना

विकारी पद
- संज्ञा
- सर्वनाम
- क्रिया
- विशेषण

अविकारी पद
- क्रिया विशेषण
- सम्बन्ध वाचक
- समुच्चय बोधक
- सम्बोधन

विकारी पद - वे पद जो लिंग, वचन, काल, और वाच्य के कारण बदल जाते हैं।
e.g. राम जाता है, सीता जाती है

अविकारी पद - वे पद जिनपर लिंग, वचन, काल और वाच्य का प्रभाव नहीं पड़ता है
e.g. राम धीरे-धीरे जाता है
सीता धीरे-धीरे जाती है.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार विकारी पदों का वर्णन संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण व क्रिया के रूप में करते हैं इससे भाषा में प्रभाव व प्रवाह का निर्माण होता है। क्योंकि कभी-कभी भाषा में वैज्ञानिक तत्वों की कमी का आक्षेप भी लगा जाता है।

इस प्रकार विकारी व अविकारी पद, व्याकरणिक विवेचना में पद व्यवस्था मे आते हैं जो भाषा या व्याकरण के मूल आरम्भिक तत्व हैं।

अच्छा

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मानक हिन्दी की वाक्य-संरचना

वाक्य संरचना से तात्पर्य उन व्यवस्था से जिसमें व्याकरण के तत्व, व्याकरण सम्मत नियमों से एक साथ जुड़कर किसी भाषिक संरचना की उत्पत्ति करते हैं। इससे ही भाषा की अभिव्यक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।

जब विभिन्न पद, कारक के अनुरूप अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं तो वाक्य का निर्माण हो जाता है।

वाक्य के प्रकार

सरल वाक्य | संयुक्त वाक्य | जटिल वाक्य

सरल वाक्य - राम जाता है।

संयुक्त वाक्य: राम घर जाता है किन्तु जल्दी आयेगा। दो उपवाक्य जुड़कर बनते हैं

जटिल वाक्य - जब एक वाक्य मुख्य वाक्य हो बाकी वाक्य गौण हों और योजक आदि से जुड़े हों

अन्य प्रकार से भी वाक्यों का वर्गीकरण किया जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

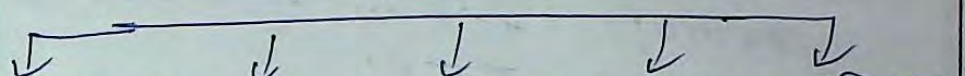

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वाक्य

- प्रश्नवाचक
- नकारात्मक
- सकारात्मक
- आज्ञावाचक
- विस्मय वाचक

इस प्रकार हिन्दी की वाक्य संरचना अत्यन्त ही वैज्ञानिक है। इससे भाषा की अभिव्यक्ति को वास्तविक रूप मिलता है।

ठीक है
और गहराई अपेक्षित
मॉडल उत्तर देखें

$\frac{4\frac{1}{2}}{10}$

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) देवनागरी लिपि के दोषों पर प्रकाश डालिये। 20

देवनागरी लिपि पर निम्न दोषों का आरोप लगाया जाता है।

[I] हिन्दी की ध्वनि व्यवस्था को अधिक व्यापक माना जाता है इसलिए माना जाता है कि इसमें वर्णमाला का आकार बहुत बड़ा है इसलिए इसको सीखना आसान नहीं है। याद करना कठिन होता है।

[II] एक ध्वनि के लिए एक से अधिक चिन्हों का प्रयोग किया जाता है।
[ध] > [घ]

[III] एक प्रतीक के लिए एक से अधिक ध्वनि का प्रयोग
[यमुना] > [जमुना]

[III] ध्वनि में और चिन्हों में एकरूपता का अभाव है।
टी > ची

[IV] कुछ अप्रचलित ध्वनियाँ हैं जिनका उपयोग नहीं होता है वे भी बनी हुई हैं [ऋ]

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(V) मात्रा व्यवस्था अवैज्ञानिक होने का भी आरोप लगता है। कुछ मात्रा ऊपर, कुछ नीचे तो कुछ आगे पीछे
eg. [राम] ईश्वर, लीला, कुछ

(VI) चिन्हों को लिखना कठिन है।
[क्ष] [छ]

(VI) शिरो रेखा को भी अनावश्यक बताया जाता है। इससे समय व कागज की बर्बादी होती है।

(VII) संयुक्त व्यंजन निर्माण की प्रक्रिया पर भी आरोप लगता है कि यह अवैज्ञानिक है।

(VIII) कुछ चिन्हों जैसे 'र' प्रयोग निश्चित नहीं कहीं ऊपर तो, कहीं नीचे कहीं नाव में, eg
eg [कुरूप], [उर्दू], [राष्ट्र]

(IX) देवनागरी लिपि पर अनुस्वार अनुनासिक को लेकर भी आरोप लगते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

[गंगा] > [गङ्गा]
[संबन्ध] > [सम्बन्ध]

(v) विसर्गों के प्रयोग को भी वैज्ञानिकता के विपरीत माना जाता है।

सुझाव :-
(i) अप्रयुक्त ध्वनियों को समाप्त किया जा सकता है।
eg [ऌ]

(ii) मानक रूपों का प्रचलन बढ़ाया जाए : [ट], [ख]

(iii) गुजराती ध्वण्डी को स्वीकार कर लिया जाए।

(iv) फारसी नुक्तों का प्रयोग किया जाए : eg क़ ख़ ग़ ज़ फ़

(v) शिरोरेखा बनी रहे।

इस प्रकार थोड़े से ही परिवर्तन से नागरी लिपि के दोषों को दूर किया जा सकता है। समय के साथ सभी लिपियों में दोष आना स्वाभाविक तभी तो नई लिपि का विकास होता है परन्तु, फिर भी, नागरी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लिपि की वैज्ञानिकता के कारण इसमें अखिल भारतीय लिपि बनने की क्षमता भी है।

बहुत अच्छा

11½/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

हिन्दी भाषा की व्याकरणिक व्यवस्था में लिंग व्यवस्था अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। यह एक विकारोत्पादक तत्व के रूप में प्रयोग होता है।

विकारोत्पादक पदों/तत्वों में लिंग, वचन, काल तथा वाच्य है।

हिन्दी भाषा में केवल दो वचन और दो लिंग का ही प्रयोग किया जाता है। इसमें ~~लिलिंग~~ और पुलिंग दो लिंग है। संस्कृत में एक तीसरा लिंग - नपुंसक लिंग भी है। जबकि अंग्रेजी में भी दो लिंग है।

स्त्रीलिंग

लिंग व्यवस्था में स्त्रीलिंग व पुलिंग का प्रयपन किया जाता है।

लिंग निर्माण :

[i] संस्कृत के लिंग का उसी तरह लिया जाता - बालक, बालिका
तत्सम शब्दो में उसी रूप में आते है।

[ii] तद्भव रूपों 'आ' प्रयोग से पुलिंग तथा 'ई' से स्त्रीलिंग का निर्माण होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

लड़का, लड़की

मोता, मोती

इतना ही नहीं कहीं कहीं पूर्वी व पाश्चिमी रूपों में अन्तर होता है कहीं कहीं पुलिंग तो कहीं स्त्रीलिंग है। मानक रूप पुलिंग है। 'बस' को पुलिंग नहीं माना जाता है जबकि 'ट्रक' को पुलिंग मानते है

इससे लिंग व्यवस्था में अवैज्ञानिकता उत्पन्न होती है। लिंग के कारण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण में विकार भी उत्पन्न होता है।

वह जाता है।
वह जाती है

इस प्रकार हिन्दी की लिंग व्यवस्था व्याकरण व्यवस्था का अनिवार्य घटक है परन्तु संस्कृत के विपरीत केवल दो लिंग है कभी - कभी इसमें अवैज्ञानिकता का दोष जरूर लगता है परन्तु अपने महत्व को बनाये हुए है।

उदाहरण
गहराई नहीं
जोड़ सकते हैं

4½/10

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(ग) मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

किशोरीदास वाजपेयी का मानक हिन्दी के विकास मे अप्रतीम योगदान है। कामता प्रसाद गुरु के साथ हिन्दी का 'शब्दानुशासन' इनके योगदान को व्यक्त करता है।

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा अपने 'हीरक जयन्ती' समारोह में, 1953 मे, हिन्दी व्याकरण की रचना का कार्य सौंपा जिसे इन्होंने 1956 में पूरा कर दिया।

इन्होंने हिन्दी भाषा की उत्पत्ति ब्रजभाषा का व्याकरण तथा अन्य भाषाओं से हिन्दी का सम्बन्ध भी बताया।

हिन्दी भाषा के मानकीकरण हेतु इन्होंने 'हिन्दी शब्दानुशासन' के माध्यम से निम्न व्यवस्थित प्रयास किया।

(i) हिन्दी की कारक व्यवस्था को स्थापित कर दिया। कामता प्रसाद गुरु ने इसमें अपेक्षित कार्य नहीं किया था।

(ii) कृत वाच्य और 'कर्म वाच्य' के भेद को स्पष्ट किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) इन्होंने माना कि हिन्दी संस्कृत की चेरी नहीं है, बल्कि वह स्वतंत्र भाषा है।

(iv) व्याकरण संरचना में इन्होंने हिन्दी की अपनी व्याकरण संरचना की रचना की। इससे पहले अंग्रेजी को आधार बनाया जाता था।

(v) 'अष्टाध्यायी', तथा 'महाभाष्य' को आधार बनाकर हिन्दी भाषा का व्याकरण तैयार किया।

(vi) लिंग व्यवस्था तथा वचन व्यवस्था को हिन्दी की विशेषता के आधार पर मानकीकृत किया।

इस प्रकार आचार्य किशोरीदास वाजपेयी का हिन्दी भाषा के मानकीकरण में अत्यंत सृजनात्मक योगदान है। इन्होंने हिन्दी व्याकरण को सिद्ध कर दिया तथा मानता प्रकट करने की कमियों का अन्त कर दिया।

अच्छा ; 8½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालिये। 20

किसी भाषा की वैज्ञानिकता का सम्बन्ध उसकी लिपि की वैज्ञानिकता से भी गहराई से जुड़ा होता है। एक वैज्ञानिक लिपि ही, वैज्ञानिक भाषा का मार्ग निर्मित करती है। देवनागरी लिपि इसी अर्थ में विश्व की अग्रणी वैज्ञानिक लिपि है।

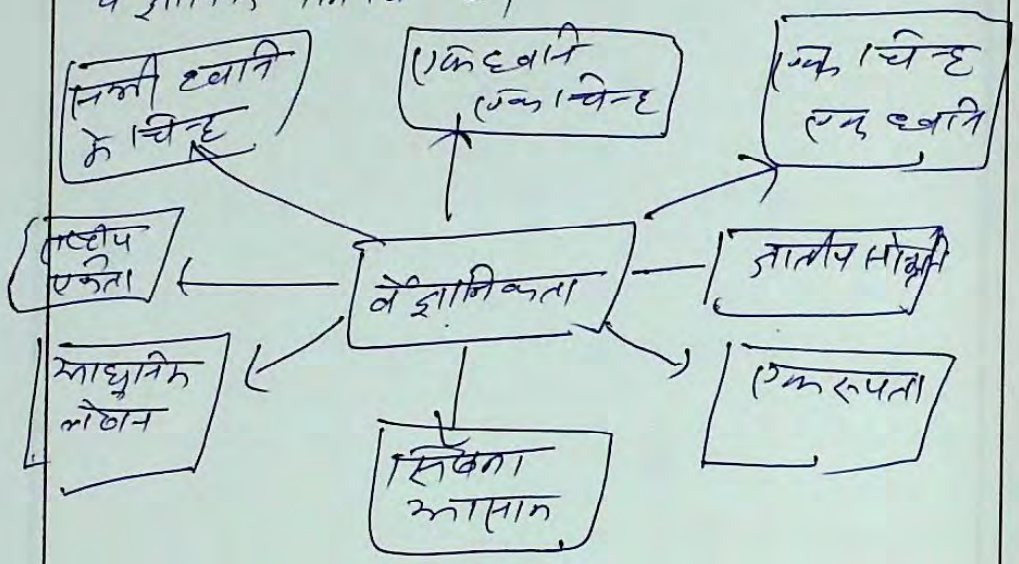

उपरोक्त कसौटी पर देवनागरी लिपि का परीक्षण किया जा सकता है।

① देवनागरी लिपि में हिन्दी की सभी ध्वनियों का चिन्ह है। और यह वर्णक्रमानुसार है। और यह उच्चारण स्थान के अनुरूप भी है।
कण्ठ, तालू, मूर्धा, ओष्ठ, दन्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

[II] एक ध्वनि के लिए एक चिन्ह है। [क], अंग्रेजी में Put, But

[III] एक चिन्ह से एक ध्वनि का उच्चारण होता है।
[काम], [कायरता]
अंग्रेजी में - Put, 'उ'
But, 'अ'

[IV] लिपि में एकरूपता न रहना है। सभी शब्दों तथा ध्वनियों का मानक रूप है। [ह]) ठ

[V] इसको (लिखना) आसान है क्योंकि इसमें केवल तीन आकृतियाँ है - । ' — ' ० सीखना

[VI] शिरो रेखा आति वैज्ञानिक है। इससे शब्दों में अलगाव होता है।

[VII] नागरी लिपि भारतीय जातीय संस्कृति को भी अभिव्यक्त करती है। इसकी उत्पत्ति, आदि लिपि - ब्राह्मी से मानी जाती है। इससे ही देश की अन्य लिपियों का विकास हुआ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) आधुनिक वैज्ञानिक व तकनीकी साधनों के अनुरूप भाषा व लिपि है, 'यूनीकोड' ने इसे और आसान बना दिया है।

(iv) देवनागरी लिपि में अन्य भाषाओं की भी ध्वनियों को शामिल करने की क्षमता है।

(v) इसमें देश की राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की भी अभिव्यक्ति होती है।

इस पर ध्वनि की कुरूपता का भी आरोप लगाता है - ~~प्रभुता~~) जमुना तथा ख जैसी कठिन रूपों का भी। इसमें शिरो रेखा को अनावश्यक होने का भी आरोप यद्यपि लगता है।

निष्कर्ष ~~कहा~~ जा सकता है कि हिन्दी भाषा को पूरी वैज्ञानिकता से अभिव्यक्त करने की क्षमता देवनागरी लिपि है। इनमें अखिल भारतीय तथा वैश्विक लिपि बनने की पर्याप्त सम्भावना जो इसकी वैज्ञानिकता की निर्विवाद स्वीकृति है।

अच्छा प्रयास और गहराई ला सकते हैं

10½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था से संबंधित समस्याओं पर विचार कीजिये। 15

हिन्दी की व्याकरण व्यवस्था में विकार उत्पादक तत्वों का विशिष्ट स्थान है। लिंग-व्यवस्था काल, वचन तथा वाच्य के साथ महत्त्वपूर्ण विकार उत्पादक तत्व है। इनके कारण संज्ञा, सर्वनाम क्रिया, तथा विशेषण में विकार उत्पन्न हो जाता है।

हिन्दी में संस्कृत के विपरीत केवल दो लिंग है- स्त्रीलिंग और पुलिंग, जो अंग्रेजी के समीप है। हिन्दी में लिंग व्यवस्था पर कोई ठोस वैज्ञानिक नियम न होने का आरोप लगता है। क्योंकि लिंग निर्धारण का कोई निर्धारित नियम है जो हैं भी उसके अपवाद अनेक है।

अकारान्त कहीं पुलिंग तो कहीं स्त्रीलिंग है- जैसे, बालक पुलिंग कहीं कहीं आकारान्त पुलिंग तो कहीं स्त्रीलिंग है- eg. लड़का - पुलिंग

बालिका - स्त्रीलिंग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नपुंसक लिंग के लिंग निर्धारण का कोई ठोस तरीका नहीं है। जैसे,
ट्रक - पुल्लिंग, बस - स्त्रीलिंग
साइकिल - स्त्रीलिंग

'इकारान्त' के सन्दर्भ में भी समस्या है कई पद पुल्लिंग तो वही स्त्रीलिंग है
दही - पूर्वी UP स्त्रीलिंग
दही - पश्चिमी UP - पुल्लिंग

राष्ट्रपति को लेकर भी समस्या थी है लेकिन आज भी प्रधानमंत्री, मंत्री आदि के स्त्रीलिंग पर समस्या है राष्ट्रपति का स्त्रीलिंग आज भी नहीं बन पाया है

इस प्रकार हिन्दी की लिंग व्यवस्था में अनेक समस्याएं होते हुए भी इनमें 'आकारान्त' 'ईकारान्त' आदि को सामान्यतः नियम बनाकर लिंग का निर्धारण किया जा सकता है

व्याकरण संबंधी
अनुप्रयोग और महत्व लॉग
7½
15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिये। 15

ध्वनि व्यवस्था, के साथ शब्द व्यवस्था भाषा की अनिवार्य शर्त है। ध्वनियों के मेल से शब्दों का निर्माण होता है, साथ ही ध्वनियों का मेल आवश्यक है।

शब्दों को निर्माण तथा स्रोत के आधार पर बांटा जा सकता है।

स्रोत ~~निर्माण~~ के आधार पर

शब्द

तत्सम | तद्भव | देशज | विदेशज

तत्सम:- संस्कृत से आये शब्दों को तत्सम कहते है- 'मिष्ठ' 'बालक'

तद्भव:- संस्कृत के शब्दों के विकृत रूप जैसे 'मीठा', 'लड़का'

देशज: इसमें ग्रामीण तथा लोक के शब्द आते हैं- 'हिनहिनाना' "गमकौआ"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

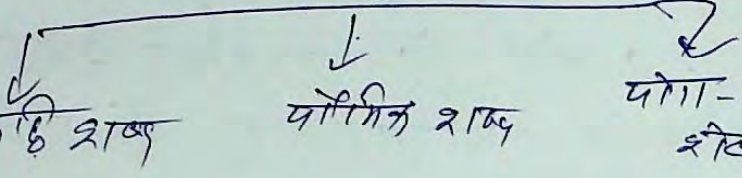

विदेशज :- जो शब्द अन्य भाषा या अन्य देशों से आये हों
" कम्प्यूटर, 'रेल'

निर्माण की दृष्टि से

- रूढ़ि शब्द
- यौगिक शब्द
- योग-रूढ़ शब्द

रूढ़ शब्द :- जो शब्द किसी एक भाव के लिए रूढ़ हो गये हों
eg. "लोहा."

यौगिक शब्द :- जो दो शब्दों से मिलकर बना हो - 'विद्यालय'

योग-रूढ़ शब्द :- ऐसे शब्द जो यौगिक होता हो परन्तु किसी एक लिए रूढ़ हो जाता है
बापू :- गाँधी जी
नेताजी - सुभाष ~~चन्द्र बोस~~
पंकज - कमल

इस प्रकार हिन्दी शब्द व्यवस्था को निर्माण तथा स्रोत के आधार पर बाँटा जा सकता है

अच्छा
8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) तारसप्तक

तारसप्तक का संपादन अज्ञेय द्वारा किया जाता था और यह हिन्दी साहित्य में दो काव्यांदोलनों को अगोवानी देने वाली सबसे महत्त्वपूर्ण पत्रिका थी।

तारसप्तक के माध्यम से अज्ञेय ने प्रयोगवाद और नई कविता को उभारा।

1943 ई० प्रथम तारसप्तक 1953 के द्वारा हिन्दी में प्रयोगवाद का शुभारम्भ होता है इनमें अज्ञेय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता जैसे कवियों की रचनाएं थी। इनमें 'सच का अन्वेषण' किये किये जाने की जाने की मांग की जाती है।

द्वितीय तारसप्तक के माध्यम से अज्ञेय एक तरफ प्रयोगवाद की समाप्ति की घोषणा करते है तो दूसरी तरफ नई कविता के शुभारम्भ का शंखनाद भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करते हैं। द्वितीय तारसप्तक 1962
आता है और यहीं अज्ञेय,
मुक्तिबोध, सर्वेश्वर, रघुवीर सहाय,
आदि नई कविता करते हैं। जो
प्रयोगवाद और प्रगतिवाद के संक्रमण
काल का पर्याय है।

इस प्रकार तीसरा तारसप्तक भी
आता है परन्तु प्रथम की तुलना में
उतना महत्त्वपूर्ण नहीं।

1943 ई० में प्रकाशित तारसप्तक का
वर्णन करें
पॉइंट उत्तर दें

2/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पंत के पल्लव की भूमिका का महत्त्व

छायावाद को पलायन, रहस्य और रोमानियत का काव्य कह कर उसकी आलोचना की जाती रही है आचार्य शुक्ल ने इसी आधार छायावाद की आलोचना की। अपने बचाव में छायावादी कवि स्वयं आये। सबसे पहले पन्त ने पल्लव की भूमिका में इन आरोपों का जवाब देते हैं।

पन्त कहते हैं कि छायावाद वेदना का काव्य नहीं है। वह वेदना थोपी हुई नहीं है, बल्कि वह कवियों की आंतरिक की हुई वेदना है। इसलिए वह स्वीकार्य है।

पल्लव की भूमिका का एक महत्त्व यह है कि इसने छायावाद के रहस्यवाद और प्रतीकात्मकता का बचाव किया इसके अनुसार छायावादी रहस्यवाद कोरा भ्रम नहीं है, वह तत्कालीन परिस्थितियों में अत्याधिक जिज्ञासा और सामाजिक भावों से निर्मित हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'पल्लव की भूमिका' अपने आप में सम्पूर्णता तब पाती है जब इसे निराला की 'परिमल की भूमिका', वर्मा की सांध्य गीत की भूमिका का साथ मिलता है, इसको प्रसाद का 'काव्य और कला तथा अन्य निबंध का साथ भी मिलता है। छायावाद पर लगने आरोपों का जवाब है पल्लव की भूमिका। इसने छायावाद को स्थापित करने में योगदान किया।

मॉडल उत्तर देखें

7/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) साकेत की उर्मिला

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा इतिहास में उपेक्षित नारी पात्रों को प्रतिष्ठा और मान प्रदान करते है। इसी क्रम में यशोधरा तथा साकेत की उर्मिला को नये आयामों में व्यक्त करते है।

रामकथा में राम, लक्ष्मण सीता के संघर्ष आदि का वर्णन तो कालिदास, वाल्मिकी से लेकर तुलसी तथा निराला सभी ने किया लेकिन उर्मिला का त्याग व समर्पण शायद ही किसी ने देखा।

उर्मिला यहाँ अपने त्याग से सीता के व्यक्तित्व से अधिक ऊँचाई प्राप्त करती है, जैसे वह अपने व्यक्तित्व से लक्ष्मण की प्रखरता को बढ़ा देती है।

उर्मिला, सीता से सवाल करती है, यदि मैं लक्ष्मण के साथ चलने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

को तोड़ देती तो उनका ध्यान भंग होता और उनकी तपस्या भंग करती थी।

इस प्रकार साकेत उर्मिला हिंदी साहित्य में उपेक्षित नारी पात्रों की प्राणप्रतिष्ठा है।

अच्छा प्रयास

5/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति

वर्मा जी के काव्य में रहस्यानुभूति का तत्व दिखाई पड़ता है। इनके 'रश्मि' 'निहार' तथा 'सांध्य गीत' इन 'रहस्यानुभूति' का अवलोकन किया जा सकता है।

"मेरे प्रियतम को भाता है,
तम के परदे में आना।।"

"मैं विरह में,
चीर हू"

महादेवी वर्मा का रहस्यवाद मध्यकालीन रहस्यवाद नहीं है। इनमें अलौकिक सत्ता के प्रति आध्यात्म नहीं है, न ही भक्ति का भाव। यहाँ रहस्यवाद का मुख्य कारण दबाव है। सामाजिक दबावों तथा अत्याधिक वेदनाओं से यह रहस्यानुभूति वर्मा जी के काव्य में दिखाई पड़ती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वर्मा जी का स्त्री होना भी इस स्वाव को बढ़ा देता है। इसलिए चारों छायावादी कवियों में सबसे अधिक रहस्यानुभूति वर्मा जी के यहाँ है।

वर्मा जी के काव्य का एक पक्ष ही रहस्यानुभूति का काव्य बाकी अन्य पक्षों में वेदना तथा प्रकृति का सुन्दर चित्रण है।

अच्छा

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) हिन्दी के संस्मरण साहित्य-परंपरा का अति संक्षिप्त परिचय देते हुए समकालीन संस्मरण साहित्य पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सम्यक स्मृति के आधार पर किसी स्थान, भाव, व्यक्ति, घटना अथवा स्थिति की वर्णनात्मक अभिव्यक्ति संस्मरण है। यह एक प्रमुख अकाल्पनिक गद्य विधा है। इसमें स्मृति, निरपेक्षता तथा आत्मानुभव का तत्व मूल में होता है।

संस्मरण लेखन का कार्य द्विवेदी युग से प्रारम्भ होता है। इसमें महावीर प्रसाद द्विवेदी के संस्मरण महत्त्वपूर्ण है, श्रीधर पाठक ने भी संस्मरण लिखे।

दिनकर ने 'लोकदेव नेहरू' पर संस्मरण लिखे। डॉ नगेन्द्र ने भी संस्मरण लेखन किया।

महादेवी वर्मा के संस्मरण- अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, मेरा परिवार, पथ के साथी महत्वपूर्ण है। ये संस्मरणात्मक रेखाचित्र कहे जाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

शिवपूजन सहाय, तथा रामवृक्ष बेनीपुरी 'माटी की मूरत' अत्यन्त ही मार्मिक शैली में लिखा गया है।

अज्ञेय का भी संस्मरण 'शाला: एक जीवनी में दिखाई देता है। इसके अलावा प्रभाकर माचवे, रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया आदि ने भी लिखा।

समकालीन संस्मरणों में सुमन केसरी का "JNU में नामवर सिंह" तथा काशीनाथ सिंह का 'घर का जोगी, जोगड़ा' अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है इसके अलावा अनिल कुमार यादव का "वह भी कोई देश है महराज' एक संस्मरणात्मक यात्रा वृत है।

समकालीन संस्मरणों में 'वो कोई देवता नहीं थे' राजेन्द्र यादव का एक महत्वपूर्ण संस्मरण है, जिसमें लेखक को नैतिक प्रतिमानों पर देखने की औपचारिकता

उपन्यास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~का~~ खण्डन करते हैं।

'मन्नो मेरा दुश्मन' भी एक भावपूर्ण शैली किन्तु व्यंग्यात्मक शैली में लिखा गया एक महत्त्वपूर्ण संस्मरण है।

इसप्रकार भाषा की इल्की वर्णनात्मकता से निर्मित काल्पनिक गद्य विधाओं संस्मरण का स्थान केन्द्रीय है। अन्य विधाओं पर इसके प्रभाव को स्पष्ट देखा जा सकता है। इससे लेखकीय निकटता और आत्मीयता प्राप्त होती है।

अच्छा प्रयास
और गहराई ला सकते हैं
मॉडल उत्तर देखें

10½/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी कविता की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रगतिवादी कविता की यांत्रिक बौद्धिकता का निषेध की प्रयोगवाद है। इनमें कुछ समानता है तो अधिक असमानता के बिन्दु है।

असमानता के बिन्दु:-

(i) प्रयोगवाद, प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया में विकसित हुआ है।

(ii) प्रयोगवाद पर फ्रायड का थोड़ा प्रभाव है जबकि प्रगतिवाद पर मार्क्सवाद का प्रभाव है

(iii) प्रगतिवाद साहित्य को उपउत्पाद मानता है। जबकि प्रयोगवाद साहित्य को स्वायत्त रचना मानता है

(iv) प्रगतिवाद में वस्तु को शिल्प से ज्यादा महत्त्व दिया गया है जबकि प्रयोगवाद शिल्प को अधिक महत्त्व देता है भाव को अत्यन्त महत्त्व है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ii) प्रगतिवाद में राजनीतिक चेतना प्रमुख है। जबकि प्रयोग में राजनीतिक चेतना का अभाव है।

(iii) प्रगतिवाद में विचारों की यांत्रिकता है जबकि प्रयोग में अनुभूति की प्रमाणिकता है।

(iv) प्रगतिवाद भाषा को महत्व नहीं देता है प्रयोगवाद में भाषा सत्य जानने का साधन है।

(v) प्रतीकों और रहस्य का निषेध है प्रगतिवाद में, जबकि प्रयोग में प्रतीकों का प्रयोग किया गया है।

(vi) उपमा अलंकार की जोड़ा प्रयोग में दिखती है।

(vii) प्रगतिवाद साहचर्य मूलक दाम्पत्य-प्रेम है प्रयोगवाद में शरीरमध्यवादी प्रेम है।

इस प्रकार प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया प्रयोगवाद में दिखाई पड़ती है परन्तु नई कविता में दोनों ही संश्लिष्ट हो जाते हैं।

बहुत अच्छा। 9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी की 'नई समीक्षा' आलोचना-दृष्टि के प्रमुख आलोचकीय प्रतिमानों का उद्घाटन कीजिये। 15

पाश्चात्य परम्परा के New Criticism से प्रभावित आन्दोलन है। इसमें इलियट, रिचर्ड्स का बहुत योगदान है हिन्दी में अज्ञेय, मुक्तिबोध, धर्मवीर भारती आदि आलोचक इसमें शामिल थे।

'नई समीक्षा' के अनुसार: 'अनुभूति की प्रमाणिकता' और भोगा हुआ यथार्थ की ही अभिव्यक्ति की जानी चाहिए।

साहित्य का मूल्यांकन गैर साहित्यिक प्रतिमान से नहीं किया जाना चाहिए।

'वस्तुनिष्ठ समीकरण' की बात भी 'नई समीक्षा' कहती है। इसमें भाव व अभिव्यक्ति में सामंजस्यता की बात की गई है।

'शिल्प' को वस्तु से कम महत्त्व नहीं दिया गया।

इसमें भाषा को दोहरा साधन माना गया है। एक तो सत्य जानने का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूसरा इसको आगे व्यक्त करने का 'नई समीक्षा' में 'विडम्बना' तथा विरोधाभास का भी प्रयोग किया जाता है। वहाँ इसी से 'कान्ट्रास्ट' पैदा किया जाता है।

'नई समीक्षा' में बिम्बों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। इसके आधार पर रचना का मूल्यांकन किया जाता है।

'काव्य में निर्वैयक्तिकता' का महत्त्व स्थापित किया गया तथा 'रचने वाले' और भोगने वाले मन में अनिवार्य अन्तराल की बात की जाती है।

यद्यपि बाद में इलियट ने इसे 'नीबू निचोड़ आलोचना' कहकर खारिज कर दिया फिर हिन्दी में नई समीक्षा का अपना महत्त्व है। इसके माध्यम से हिन्दी आलोचना में पाश्चिमी तत्वों का समावेश हुआ।

अच्छा

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation